इल्लुमिनाति

धीरज चौधरी 'दिवेश'

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

खण्ड – 3
भाग 21 से 30

इल्लुमिनाति

खण्ड – 3

भाग 21 से 30

लेखक व सम्पादक

धीरज चौधरी 'दिवेश'

प्रकाशक : धीरज कंप्यूटर
आवरण : धीरज चौधरी 'दिवेश'
आवरण सज्जा : धीरज चौधरी 'दिवेश'
डिजिटल मुद्रक : डिजि केयर इन्फोटेक
मुद्रक संपर्क : 9871216514, 8586918719
संस्करण : 2017

© धीरज चौधरी 'दिवेश'

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र
भाग - 21

प्राथमिक पाठ्यक्रम

मित्रो द्वितीय विश्व युद्ध के समय यूरोप में केजी,नर्सरी आदि कक्षाओ का आरम्भ हुआ बच्चों को एकसाथ रखने के लिये क्योंकि हर घर के व्यस्क महिला पुरुष को गोला बारूद की फैक्टरी में युद्ध की तैयारी हेतु कार्य करना अनिवार्य था !
उनके यहां कोई विशिष्ट प्राचीन विकसित शिक्षा प्रणाली थी ही नहीं तो बच्चों को खिलौने देते थे, अक्षर ज्ञान कराते थे,कविताएं, छोटी कहानियां याद कराते थे !

1947 भारत स्वतंत्र हुआ और मौलाना अबुल कलाम जिनको भारत की प्राचीन गुरुकुल पध्दति का कोई ज्ञान, ऋषियो के ग्रंथो में उपलब्ध गणित, आयुर्वेद, विज्ञान, भूगोल की कोई जानकारी नहीं थी !

उनको देश का प्रथम शिक्षा मंत्री बनाया गया !
आस्चर्य है 32 करोड़ धर्मनिष्ठ हिन्दुओ का शिक्षमंत्री मदरसे में पढ़ा एक मौलाना क्यों ?

जबकि पंडित रविशंकर जैसे कई विद्वान उपलब्ध थे !

इस मौलाना ने एवम बाद के शिक्षा मंत्रियों ने, यूरोप की शिक्षा प्रणाली को ही भारत में लागू किया !
वहीँ के जैसे पाठ्यक्रम को यहाँ के प्राथमिक कक्षाओ में लागू किया गया !
नतीजा
बच्चे बुद्धिमान की जगह बुधू बन गए !

भारत जिसे प्राचीन ऋषियो ने जाना था कि गर्भ में ही बालक को ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता होती है एवं ये क्षमता जन्म के बाद से 9 वर्ष तक रहती है !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

आज के वैज्ञानिक इसी बात की पुष्टि करते है तो बच्चों को घर में, गुरुकुल में आज कठिन समझे जाने वाले संस्कृत विषय की शिक्षा दी जाती थी !
हजारो मन्त्र, श्लोक, नीतियां रटाये जाते थे, जोकि उनके निश्छल, शुद्ध स्मृति पटल पर जीवन भर के लिये स्थाई हो जाते थे !

यही कारण है कि प्राचीन कहानियों में हमलोग नचिकेता जैसे अत्यंत बुद्धिमान बालको की कहानियां पढ़ते है ।

आदि शंकराचार्य ने 6 वर्ष की उम्र में अनेक ग्रन्थ याद कर लिए थे !

अब आजादी के बाद स्कूलों में हिन्दू विद्यार्थी ही 95% प्रतिशत होते थे !
सरकारी स्कूलों में मुस्लिम बच्चे ना के बराबर होते थे !

इस्लामिक बस्तियो में मुस्लिम बच्चे मदरसे में पढ़ने जाते थे !

तो जिन बच्चों के DNA में वेदो, गीता के श्लोको को याद करने की क्षमता थी उन बच्चों को बचपन से कैप्टल लेटर ABCD, छोटे लेटर abcd, टेढ़ी abcd, घुमावदार abcd, अंग्रेजी कविताएं याद करने में लगा दिया !

जोकि केवल बच्चों का समय, साल बर्बाद करने का एक तरीका है ये मूर्खतापूर्ण कार्य नर्सरी से लेकर कक्षा 3 तक होता है!

जबकि मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि मेरे बड़े भाई की 4 साल की बेटी को हमलोग प्राण जी की पिंकी, चाचा चौधरी आदि कॉमिक्स पढ़कर सुनाते थे, हर चित्र पर ऊँगली रखकर संवाद पढ़ते थे !
तो बेटी को पुरे सम्वाद चित्र सहित याद हो गेये थे और फिर वो घर में अकेले ही, ट्रेन में पिंकी की कॉमिक्स खोलकर, चित्र पर ऊँगली रखकर, संवाद बोलते हुए पन्ने पलटती जाती (स्मृति के आधार पर ही, अक्षर ज्ञान नहीं था) और ट्रेन में बैठे लोग पूछते कि इतनी कम उम्र में बेटी कैसे पढ लेती है ?

हर हिन्दू (सनातन, सिख, जैन, बौद्ध) शिशु के शुद्ध DNA में प्राचीन काल के ज्ञान को स्टोर रखने का विशिष्ट गुण होता है बस उसको प्रकट कर पाने हेतु उचित प्रक्रिया, उचित गुरु चाहिए !

जो बालक ऐसे गुरु के मार्गदर्शन में पढ़ पाते है वो बचपन से विलक्षण बुद्धि के होते है !
हर साल टीवी पर केटी तुलसी, चाणक्य जैसे बालक दिखाई पड़ते है इसी पद्यति के अनुकरण के कारण !

स्वतंत्र होने के बाद भारत में 6 वर्ष की उम्र में विद्वान् हो जाने वाले शंकराचार्य !
10 वर्ष की उम्र में जटिल गणित को हल कर लेने वाले रामानुजन !
18 वर्ष की उम्र में यूरोप के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड को गलत सिद्ध कर देने वाले रजनीश !
15 वर्ष की उम्र में डाक्टर बन जाने वाले बालक विकसित ना हो सके !

इसलिये यूरोपीय शिक्षा प्रणाली को भारत में लागू किया गया !

किसके इशारे पर ?
किसके दवाब में ?

पहचानिये उन हिन्दू विरोधियो को !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र
भाग - 22

ईसा मसीह और वेलेंटाइन डे

मित्रो भारत के स्कूलों में सर्वधर्म सद्भाव के अंतर्गत शिक्षा देने का कार्य 1947 के बाद निश्चित किया गया!

इसाई मिशनरियो को स्कुल खोलने की अनुमति दी गई।
निजी स्कूल के रूप में इसाई स्कुल हिन्दू जैन सिख ट्रस्टों द्वारा खोले गए स्कुल ही थे!

1947 में केवल जिला मुख्यालय शहर में स्थित इसाई स्कुल अब वर्तमान में तहसील से लेकर गांव तक पहुच चुके है!

तो हर इसाई स्कुल के प्रांगण में ईसा मसीह की सफ़ेद वस्त्रों में, कबूतर उड़ाते हुए, एक मूर्ति अवश्य होती है!

इन स्कूलों में जाने वाले हिन्दू बच्चे 4 साल की उम्र से ही ईसा मसीह को देखने लगते है और इसाई स्कुल के शिक्षकों को इस मूर्ति के सामने नमन करते देखते है!
बस बाल मन प्रभावित हो जाता है!

एक कहानी हम सब ने पढ़ी है कि बलिष्ठ विशाल युवा हाथी को एक मामूली सांकल से बांध कर रखा जा सकता है क्योंकि , बचपन में ही जब वो उस सांकल में बंधा हुआ था तो उस छोटे हाथी ने कई बार सांकल तोड़कर उच्छलकूद करने का प्रयत्न किया किंतु उसकी उम्र की तुलना में सांकल अधिक मजबूत होने के कारण वो तोड़ नही पाया और उसके मन में ये धारणा बन गई कि यही मेरा जीवन है इतनी ही मेरी शक्ति है!
और यही मानसिकता होने के कारण युवावास्था में वही हाथी विशाल वृक्षो को तो उखाड़ देता है किंतु शाम को सांकल में बंध जाने के बाद वो गुलाम की तरह व्यवहार करने लग जाता है एक मामूली महावत के सामने !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

तो इसाई मिशनरियों ने बस इसी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का उपयोग किया है भारत की नई पीढ़ी को गुलाम बनाने के लिये !

जब बालक बचपन से ही इसे मसीह की मूर्ति, नतमस्तक होते शिक्षकों को देखते है तो स्वयं भी ऐसा ही करते है और उनके निश्छल मन में ईसा मसीह के प्रति अज्ञात श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है!

अब इसाई मिशनरी या उनका मीडिया!

रोज डे !
बेलेंटाइन डे !
फ्रेंडशिप डे !

आदि मनाने लग जाते है !
और नई पीढ़ी जब इन पाश्चात्य त्योहारों का इतिहास खोजती है Google पर ! तो इसाई देश का इतिहास मिलता है जिसके भगवान् ईसा मसीह होते है तो 4 साल की उम्र से ईसा मसीह को देखने वाला बालक 24 साल की उम्र में ईसाईयों द्वारा प्रचारित त्यौहार मनाने में बिल्कुल संकोच नहीं करता क्योंकि उसका अवचेतन मन इस प्रणाली को 4 साल की उम्र में स्वीकार कर चुका था !

इसाई स्कूलों में पढ़े विद्यार्थियों को आप कभी भी इसाई मत का विरोध करते नहीं पाओगे!

भले ही वो इस्लामिक आतंक का प्रखर विरोधी हो हिन्दू (सनातन, सिख, जैन, बौद्ध) धर्म में पूर्ण आस्थावान हो!
और
यही कारण है कि पिछले मात्र 30 वर्षो में न्यू ईयर, फ्रेंडशिप डे, वेलेंटाइन डे आदि हर छोटे शहर तक में प्रचलित हो चुके है !
क्योंकि अब हर छोटे शहर में इसाई स्कुल में पढ़ा 4 साल का बच्चा 24 साल का हो चुका!

और छोटी जगह में 50 ऐसे बच्चों के प्रभाव में (उस जगह के सबसे समृद्ध परिवार), 500 साधारण बच्चे उनके पीछे अनुपालन करने में लग जाते है क्योंकि प्राचीन मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

महाजनो येन गता स पन्था:
(जिधर बड़े लोग जाते है बाकी लोग उसी रास्ते पर चल पड़ते है)

मित्रो बड़े योजनाबद्ध तरीके से एक पूरी पीढ़ी विकसित की गई है, इसाई मिशनरियों के स्कूल खोल कर!

किनके सहयोग या मार्गदर्शन में !
पहचानिये !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 23

टारगेट वर्ष 2090

मित्रो भारत में 1947 के बाद यदि निजी शिक्षण संस्थान खुले तो हितकारिणी, जैन, सिख ट्रस्ट द्वारा खोले गए और अग्रसेन महाविद्यालय, तीर्थंकर यूनिवर्सिटी , सरस्वती शिशु मंदिर, महर्षि विद्या मंदिर आदि नाम से खोले गए!

फिर बाद में सेठ लोग अपने माता पिता के नाम से स्कुल कालेज खोलने लगे! जैसे स्व श्री बद्री सिंह जूनियर हाई स्कूल,ईश्वरदीन PG कॉलेज,देवी देबताओ,प्राचीन ऋषियो, माता पिता के नाम पर हिन्दू (सनातनी,जैन,सिख,बौद्ध) वर्ग समस्त शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक कार्य करता है!

किंतु आपको आश्चर्य नहीं होता कि इसाई स्कुल केवल इसाई संत के नाम से ही क्यों खोले जा रहे है?

पिछले 100 वर्षों में इस नामकरण पध्दति में बिल्कुल भी बदलाव क्यों नही हुआ ??

एक बात हमेशा ध्यान रखिए कि किसी संस्कृति के विनाश हेतु इल्लुमिनाति 100 वर्षो की दीर्घकालीन योजना बनाता है फिर उनके वंशज इस योजना पर कार्य करते जाते है!

तो इल्लुमिनाति ने पहचाना कि गुरुकुल ही इस देश की भौतिक समृद्धि ,ज्ञान के आधार है तो 1850 से ही गाँव गाँव घूमकर गुरुकुल नष्ट कर दिये गए!

ये गुरुकुल प्राचीन ऋषियो के नाम पर चलते आ रहे थे।

फिर मिशनरियों ने स्कूल कालेज खोलने आरम्भ किये और केवल इसाई संतो के नाम पर!

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इसाई स्कूल में पढ़ने वाले बालक 4 साल की उम्र से ईसा मसीह और एक इसाई सन्त का नाम जानने लग जाते है जिस स्कूल में वो पढ़ते है और इसी सन्त का फर्जी जन्मदिवस या स्मृतिदिवस अब मनाया जाने लगा है इन स्कूलों में (रोज अखबार पढ़िए ध्यान से)!

अब वर्ष 2015 तक 25 साल जिनकी उम्र है ऐसे युवक युवतियों की एक पीढ़ी तैयार हो चुकी है जो रोज डे, वेलेंटाइन डे, फ्रेंडशिप डे आदि मनाते है!

ये प्रथम चरण हुआ हिन्दू धर्म विध्वंश का!

अब इसाई संतो का जन्मदिन मनाना दूसरा चरण आरम्भ किया है इन मिशनरियों ने !

अभी ये स्कूल स्तर पर है (जैसे ऊपर लिखे डे की शुरुआत इसाई स्कूलों से हुई) और जब ये वर्तमान स्कूली पीढ़ी 25 वर्ष की उम्र की हो जायेगी !

2040 तक तो इसाई संतो के जन्मदिन फिर सामाजिक स्तर पर मनाए जाने लगेंगे (जैसे ऊपर लिखे डे अब सामाजिक स्तर पर व्यापक हो गए)
ये तीसरा चरण होगा !

(ध्यान दीजिए संत रविदास जी की जगह अब अम्बेडकर की मूर्ति ने ले ली है ये उदाहरण है बदलाव प्रक्रिया का)

और फिर चौथा चरण आरम्भ होगा जिसमें इन इसाई संतो को ही भारत देश का उद्धारक, भारत देश का ऋषि बताया जाएगा!

और फिर नेहरू की किताब डिस्कवरी आफ इंडिया का उदाहरण देते हुए बताया जाएगा कि “संट पाल, सेंट ऑगस्टिन, सेंट लूथर आपके (हिन्दू के) ही पूर्वज थे !”

क्योंकि नेहरू की किताब के अनुसार (और स्कूल के पाठ्यक्रम में पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार) आर्य यूरोप से भारत आये थे !

ये कार्य 2075 में आरम्भ होगा और हिन्दू लोग मानेंगे भी क्योंकि इस समय तक इसाई स्कूलों से पढ़कर निकले लोग हर गांव में होंगे !

बच्चे से लेकर बूढ़े तक इसाई स्कूल उत्पाद जिस बच्चे का जन्म 2015 में हुआ है वो बचपन 4 साल से ही इसाई डे मनाएगा !

स्कुल में इसाई संतो के जन्मदिन मनाएगा तो 2075 तक यही आदमी 60 वर्ष का होगा और इसके नाती पोते भी वही करेंगे जो दादाजी बताएंगे, सिखाएंगे ! बस नाम के हिन्दू दादाजी वही बता पाएंगे जोकि स्कुल में सीखा होगा क्योंकि धर्म के नाम पर वो सेकुलर हो चुके होंग यानी धर्मविहीन!

और इस तरह वर्ष 2090 तक इस भारत देश में हिन्दू ऋषियो की जगह इसाई ऋषि ही असली आर्यवंशी के रूप में प्रसिद्ध होंगे माने जाएंगे !

क्योंकि असली प्राचीन ऋषियो के ग्रन्थ गायब हो चुके होंगे सेकुलरवाद के नाम गीता प्रेस जैसे संस्थान बन्द किये जा चुके होंगे !
(हंस, दिनमान, ब्लिट्ज, धर्मयुग पत्रिकाएं कैसे बन्द हुई ?)

और उपलब्ध ग्रंथो या ऋषियो, देवी देबताओ के नाम को विभिन्न प्राचीन उदाहरणों प्रसंगों द्वारा बदनाम किया जा चुका होगा !

वर्तमान में शोशल मिडिया पर ये कार्य आरम्भ हो चुका है और इनके संरक्षण के लिये नेहरू ने संविधान में अभिव्यक्ति के अधिकार का कानून बना दिया था ! इलुमिनाती योजना का एक चरण, जोकि केवल हिन्दू धर्म की निंदा पर ही लागू होता आया है 1950 से अभी ओवेसी, जाकिर नाइक, पश्चिम बंगाल के बशीरहाट की घटना तक!

मित्रो नेहरूजी को यूहीं कश्मिरी ब्राह्मण नही बताया गया!

नेहरू जी से यूँ ही डिस्कवरी आफ इंडिया नही लिखवाई गई !

इस किताब के ऊपर 1990 में यूंही धारावाहिक नही बनाया गया!
सब 100 वर्षीय व्यापक योजना का एक हिस्सा है ताकि 2090 में प्रमाण के रूप ये बताया जा सके कि कश्यप ऋषि के वंसज कश्मीरी ब्राह्मण नेहरू ने ये स्वयं प्रकट होकर बताया था कि आर्य कौन थे !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सावधान हिन्दुओ !

बच्चों को प्रतिदिन अपने धर्म, अपने ऋषियो, अपनी संस्कृति, अपने वेद पुराण के विषय में बताये और प्रत्येक पुराण में लिखे अंतरिक्ष अध्याय,जम्बूद्वीप वर्णन और ब्रह्मा के वंश का वर्णन वाला आध्याय अवश्य पढ़ने को दे!
ताकि वो जान सके कि आज जो ज्ञान,धर्म दिख रहा है भारत में!

वो मेरे प्राचीन ऋषियो के कारण ही है
और मैं ही ब्रह्मा जी का वंशज हूँ!

किसी भी एक पुराण में उपर्युक्त तीन अध्याय अवश्य पढिये!
गीता प्रेस गोरखपुर की पुराण पुस्तके!

गूगल से PDF डाऊनलोड करके पढ़िए !
(ध्यान रहे जिनमे गन्दे भाष्य हों उन्हें कतई न पढ़े ये भी षणयंत्र है)

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग – 24

शैक्षणिक सत्र

मित्रो 1947 के बाद भारत में 32 करोड़ हिन्दू और 5 करोड़ मुस्लिम थे !

भारतवासियों का मुख्य व्यवसाय और कमाई का साधन कृषि ही था और व्यापार जगत भी इसी कृषि उत्पाद आधारित था उद्योग आधारित नहीं !

तो जुलाई में स्कूल खुलते हैं पूरे भारत में मार्च तक परीक्षाएं होती हैं !
फिर गेहू की फसल कटने के बाद घरों में शादियां होती थी सभी सम्बन्धी जन मामा, चाचा, फूफा,जीजा,मौसी आदि घर में विवाह कार्यक्रम में एकत्रित होते थे पारिवारिक सम्बन्ध प्रगाढ़ होते थे !
छोटे बच्चों को सभी सम्बन्धियो से स्नेह मिलता था
जोकि सभी के लिये हितकारी होता था भविष्य में !

पूरे देश में जुलाई से अप्रैल तक का सत्र लगता था और 2 माह बच्चे पूरी तरह मानसिक रूप से स्वस्थ मुक्त रहते थे !
और जेठ माह की भीषण गर्मी के पहले विवाह कार्य निपट जाते थे !

पर पता नही ये सामाजिक,पारिवारिक सद्भाव किस हिन्दू विरोधी को पसंद नही आया और शिक्षा सत्र अप्रैल से आरम्भ हुआ और भारतीय हिन्दू पारिवारिक कार्य पूरी तरह बिखर गए और अब लोग केवल 2 दिन की छुट्टी ही लेकर आ पाते है कार्यक्रम में सम्मिलित हो पाते हैं !

दूसरा पक्ष इसका ये है कि अप्रैल में शिक्षा सत्र समाप्त होने से इसाई मिशनरियों को अपने स्कूलों का ताम झाम बनाये रखने में बहुत दिक्कत होती है क्योंकि संलग्न स्टाफ़ को वेतन तो देना ही पड़ता था !
तो पहले बहुमत बढ़ाने के लिये निजी स्कूल खोलने के नियमो में शिथिलता की गई और कक्षा 4 तक तो अनुमति विशेष की आवश्यकता भी नही रही !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

ये शायद 1990 के बाद की बात है !

अब निजी स्कूलों की संख्या बहुत बढ़ गई तो फिर बिना किसी मांग के बच्चों के माता पिता से पूछे बिना अचानक नियम बना दिया गया कि शिक्षा सत्र अप्रैल से आरम्भ होगा जुलाई से नहीं !

इस तरह एक झटके में देश के निजी स्कूलों को गर्मी के 2 माह की मुफ्त फीस मिलने लगी और खर्चे ताम झाम व्यवस्थित हो गए !

शहर में चलने वाले आपके परिचित का एक बहुत बड़ा स्कूल है क्या उनके कहने पर शिक्षा मंत्रालय नियम बदल देगा ?

विभिन्न नामो से संचालित शक्तिशाली इसाई लाबी ने ये सब करवाया!

देश के नीति नियमो के निर्धारक कौन ?

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 25

टॉफी बांटो

मित्रो आप यदि जागरूक है तो बच्चों के लिये वर्षो पहले और आज भी टॉफी नहीं खरीदते होंगे !
किंतु बच्चों में टॉफी बाजार में टॉफी सामने क्यों रखी और इतनी बिक्री कैसे?

ईसाई आकाओं के इशारे पर मिशनरी,इसाई उद्योग, व्यापार, विज्ञापन सब एक साथ जुड़े हुए होते है ।

तो भारत में शुभ अवसरों पर मिठाई खाने खिलाने का प्रचलन रहा है!
सरकारी स्कूलों एवम अन्य स्कूलों,संस्थाओं में, 15 अगस्त, 26 जनवरी एवम अन्य अवसरों पर मिठाई, बूंदी के लड्डू , नमकीन आदि बांटे जाते रहे है!

अब भारतीय बच्चों में टॉफी कैसे लोकप्रिय हो इसके लिए इसाई स्कूलों एवम जहॉ जहॉ इसाई प्रिंसिपल आदि रहे है,वहां स्कुली बच्चों का जन्मदिन स्कुल में ही मनाने को प्रोत्साहित किया गया!

और इसके लिये बच्चों को टॉफी बाटने की प्रेरणा दी गई तो कुछ बच्चों ने ये आरम्भ किया और कुछ वर्ष बीतने पर ये एक परम्परा बन गई अब स्कूलों में!

और भारतीय लोगो की गुलामी मानसिकता ये है कि

महाजनों येन गता सा पन्था।

अर्थात-बड़े लोग,समृद्ध लोग ,जिस दिशा में चले वही अच्छा रास्ता है !

तो अन्य स्कूलों में भी ये टॉफी बाटने की परंपरा आरम्भ हो गई जबकि 1990 तक स्कुली बच्चों के दांतों में समस्याए आने पर स्कूलों में चिकित्सा परामर्श डाक्टरो द्वारा दिए जाने लगे थे जिसमें टॉफी को दांतों के लिये बहुत हानिकारक बताया गया था क्योंकि इसमें निकल, मैंगनीज आदि खतरनाक धातु तत्व होने की बात कही गई थी और टॉफी दांतो के बीच घुस जाती है तो चिपक जाती है जो कि दांत सड़ने की पहली अवस्था होती है!

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

जबकि गुड़ , मिठाई आदि ये प्राकृतिक तत्व होते है जोकि लार के सम्पर्क में रहते कुछ घण्टो में घुल जाते है जबकि
टॉफी अप्राकर्तिक धातु उपस्थित होने के कारण लम्बे समय तक दांतो के बीच फ़स्सि रहती है!

चाकलेट के अलग मीठे स्वाद के कारण बच्चों को ये टाफियां अच्छी लगी!
विज्ञापन दिखाये गए विशेष स्कूलों ने अप्रत्यक्ष मार्केटिंग में सहयोग किया और दांतों के डाक्टरो की संख्या में वृद्धि!
सम्बंधित अंग्रेजी विदेशी दवाईयो की बिक्री अरबो रूपये की प्रतिवर्ष होने लगी है!

दांतो और शरीर के लिये लाभदायक संतरे की गोली,शहद, और गुड़पाग (जिसको खाने से बुखार नही होता, लिवर स्वस्थ रहता है) गायब हो गए!

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक शड्यंत्र

भाग - 26

मिशनरी स्कूल और मॉडलिंग

मित्रो आजादी के पहले और फिर बाद में भारतीय स्कूलों में यूनिफार्म का कोई विशेष नियम नहीं था !

उस समय चर्च के स्कूलों में ही विशेष यूनिफार्म होती थी !

भारतीय सरकारी स्कूलों में फिर यूनिफार्म निश्चित हुई !
अभी भी राज्य सरकार के सरकारी स्कूलों में लड़कों को फुलपैंट शर्ट और लड़कियां सलवार सूट पहनकर जाती है !

तो चर्च के स्कूलों ने लड़कियों के लिये स्कर्ट निर्धारित किया!
सम्भवतः 1990 तक स्कर्ट भरपूर लम्बे ,घुटने के काफी नीचे तक होते थे !

लेकिन चर्च के स्कूलों ने यूनिफार्म को पूरी तरह अपने हाथ में ले लिया और फिर स्कूल से ही यूनिफार्म सिलकर मिलने लगे और धीऱे धीऱे स्कर्ट घुटने के ऊपर तक कब आ गया पता ही नही चला !

कोई भी कार्य जब धीऱे धीऱे होता है तो बदलाव समझ नही आता !

तो बहन बेटियां जिस छोटे स्कर्ट को प्राथमिक विद्यालय में आसानी से बेहिचक पहन लिया वही स्कर्ट जब 8 वि कक्षा के ऊपर की कक्षाओ में छोटा होते गया तो बेटियों को बील्कुल भी मानसिक बैचेनी नही हुई (भले ही माता पिता को होती रही हो किंतु स्कूली व्यवस्था के सामने बेबस)

और जब ये लड़कियां कालेज पहुंची तो वहाँ पूरी स्वतँत्रता होने से फिर निसंकोच कुछ भी शरीर दिखाऊ वस्त्र पहनकर जाने लगी !

साथ ही स्कूलों में,कॉलेजों में,पिछले 20 वर्षों में मॉडलिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की जाने लगी है !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अब छोटे स्कर्ट, मॉडलिंग प्रतियोगिताओं से शरीर दिखाने का भरतीय लड़कियों के मन का संकोच हट गया !
और इस तरह बॉलीवुड विज्ञापन कम्पनियो, टीवी सीरियलों, को अर्ध या पूर्ण नग्न मॉडल मिलने लगी !

विपाशा बासु, पुनम पांडेय आदि अनेकानेक नाम स्पष्ट है !

सलवार सूट उतारकर मिनी स्कर्ट तंक लाने के लिए ऊपर लिखी पूरी योजनाबद्ध प्रक्रिया अपनाई गई,30 वर्षो में क्रियान्वित की गई !

साथ ही इस कार्य की तरफ अधिक आकर्षित करने के लिये सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय आदि पुरानी हीरोइनो को निरन्तर टीवी, फिल्मों के मॉध्यम से प्रचरित किया गया

और इन सबकी जड़,स्कूल में ही पड़ चुकी थी !

बैकग्राउंड चेक कर लीजिये कि नग्न प्रिय लड़कियां प्रायः किन स्कूलों से पढ़कर निकली होती आई है !

और आज 30 वर्षो से ये सब देखते देखते हम और आप सब लोग भी अभ्यस्त हो चुके हैं !

ये होती है इल्लुमिनाती कि किसी प्राचीन संस्कृति में घुसपैठ करने की नीति षड्यंत्र पूरी तरह योजनाबद्ध !

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड़यंत्र

भाग - 27

टीवी पर प्रश्नोत्तरी

मित्रो 1984 से 1991 तक टीवी पर दूरदर्शन ही एकमात्र चैनल होता था 1991 के बाद केबल टीबी, अनेक चैनलों का आरम्भ हुआ!
तो दूरदर्शन पर प्रत्येक रात को समाचार के बाद कोई धारावाहिक आता फिर शास्त्त्रीय संगीत का कॉर्यक्रम आता था प्रतिदिन!

रविवार सुबह 8 से रात 11 तक पूरा मनोरंजन का दिन होता था!

रविवार को सुबह 8 बजे से रंगोली (फिल्मों के प्रसिद्ध गीत) ,रामायण या महाभारत, पंचतंत्र या खजाना (विश्व प्रसिद्ध कहानियां) आदि के धारावाहिक आते थे!
शाम 6 बजे एक हिंदी फिल्म आती थी!

इन्ही रविवारी कार्यक्रमो के बीच में 11 बजे एक विशेष कार्यक्रम आता था स्कुली विद्यार्थियों के लिये प्रश्नोत्तरी कॉर्यक्रम अर्थात Quiz!

मंच पर प्रश्नकर्ता रहते और सामने देश के विभिन्न स्कूलों से चुने हुए छात्रों की 4 जोड़ियां रहती थी। (किसी को आज तक नही पता चला कि किस तरह ये विद्यार्थी इस टीवी कार्यक्रम के लिये चुने जाते पूर्ण रहस्य)

आपको आपको आश्चर्य होगा ये जानकर कि दूरदर्शन पर प्रतिदिन केवल अंग्रेजी न्यूज ही एकमात्र अंग्रेजी कार्यक्रम आता था शेष सभी कॉर्यक्रम हिंदी में!

रविवार सुबह 8 बजे से रात टीवी बन्द होने तक हिंदी के सभी मनोरंजक कॉर्यक्रम के बीच में स्कुली बच्चों का अंग्रेजी में प्रश्नोत्तरी कॉर्यक्रम होना बहुत आश्चर्यजनक था!

किंतु अब इसका उद्देश्य एवं प्रक्रिया समझिये!

इस कार्यक्रम में 3 या चारो जोड़ी इसाई मिशनरी स्कुल की ही रहती थी एकाध जोड़ी कभी महर्षि स्कुल आदि की रहती थी!

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

यानी दूरदर्शन टीवी में पुरे भारत के लाखो स्कूली विद्यार्थियों के लिये एकमात्र कॉर्यक्रम यानी ज्ञानवर्धक प्रातियोगिता (Quiz Time, KBC जैसे) वो भी अंग्रेजी में वो भी इसाई मिशनरी स्कूलो के प्रभुत्व वाला !

अर्थात ये कॉर्यक्रम स्प्ष्ट रूप से भारत के विद्यार्थियों पर एवं उनके माता पिता पर अंग्रेजी मॉध्यम की तरफ आकर्षित करने हेतु मानसिक दवाब बनाने वाला कॉर्यक्रम था और कॉर्यक्रम के इसाई स्कूलों का नाम देखकर नगरों, शहरो के माता पिता तुरंत दौड़ लगाते इन स्कूलों में बच्चों को प्रवेश दिलाने हेतु ऊँची फीस लुटाकर !

मित्रो इस तरह दूरदर्शन भी एक मॉध्यम बनाया गया इसाई मिशनरी के स्कूलों को प्रचारित करने लोकप्रिय बनाने में जिसके कारण ही ये स्कूल इतने महंगे,खर्चीले हुए और माता पिता मानसिक गुलाम की तरह व्यवहार करते इन स्कूलों में घुसते रहे !

ये है इल्लुमिनाती की ताकत भारत में !

आश्चर्य है भारत के दूरदर्शन के अधिकारी भी इनकी इच्छा के अनुरूप कार्य करते रहे!

किसके दवाब में ?
जबकि दूरदर्शन तो सरकारी विभाग होता है !

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड़यंत्र

भाग - 28

स्कुली विद्यार्थियों को टारगेट बनाना

मित्रो भारत के लोगो को लगता था !
और अभी भी लगता है कि अख़बार अलग है पत्रिकाएं अलग होती है !
फिल्मे कोई बनाता है !
टीवी अलग होती है!
और ये सब स्वतंत्र होते है पर
इन माध्यमो की खबरों के तरीके गुणवत्ता पर ध्यान देंगे तो पता चल जाएगा कि उपर्युक्त सबके पीछे कोई नियंत्रक भी बैठा है !

1988-89 में सुबह 8 बजे दुरदर्शन पर Teenage Turmoil नामक एक कार्यक्रम आता था जिसमे स्कुल के कक्षा 9 से ऊपर के विद्यार्थियों लड़के लड़कियों को एक दूसरे की तरफ आकर्षित होते दिखाने वाला कार्यक्रम होता था !

और ये वही समयकाल था !
जब स्कूलों में पहली बार यौन शिक्षा के नाम पर महिला पुरुष के गुप्त अंगो के चित्र सहित जीव विज्ञान की किताब में अध्याय आरम्भ हुआ था !

ये वही समयकाल था !

जब अखबारों में टेनिस खिलाड़ियों मार्टिना नवरातिलोवा के मैच के दौरान महिला खिलाड़ी के विशिष्ट अंगो को दिखाने वाले बड़े बड़े फोटो अखबारों में आते !

ये वही समयकाल था !

जब बॉलीवुड में राजकपूर की प्रसिद्ध फिल्मों में कुछ मिंन्ट का स्त्री शरीर के अंग को दिखाने वाला कोई दृश्य होता और इनकी फिल्म अंग्रेजी स्कूल पर आधारित होती थी !

ये वही समय था !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

जब जो जीता वही सिकन्दर नाम की स्कूली विद्यार्थियों की प्रेम कहानी और प्रतियोगिता प्रतिद्वंदिता को लेकर फिल्म बनी जिसमे महंगे अंग्रेजी स्कूलों की प्रष्ठभूमि ही थी और इस फ़िल्म में स्कूली लड़के लड़कियों में अवैध संबंधों की बात दिखाई गई उस तरह के डायलॉग, एक्शन रखे गए !

और

ये अब वही समयकाल है !
जब एक फिल्म में एक सीन में अमिताभ के हाथ में कंडोम दिखाया गया विवाह रजिस्ट्री कार्यालय में !

ये वही समयकाल है !

जब कंडोम का सर्वजिनिक विज्ञापन आरम्भ हुआ !
और
आप सोचते है की भारत के अखबार, टीवी, फिल्मे, पत्रिकाएं अलग अलग लोगो के स्वतंत्र अधिकार में है !

मित्रो भ्रामक तथ्य है ये !

वास्तविकता ये है कि परदे के पीछे कोई है !
जो इन सब माध्यमो को एक साथ एक विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति हेतु संचालित करता है !

मॉध्यम अलग अलग पर उत्तेजक कथा कहानी एक जैसे !

एक विशिष्ट वर्ग को एक साथ एक ही समय काल में टारगेट करते हुए!

ये है इल्लुमिनाती की ताकत भारत में !

हम भारतीय इनके बनाये कुचक्र को अपनाकर आधुनिकता का परिचय देते हैं!
और अपनी संस्कृति का विनाश करते हैं !

संज्ञानात्मक !
क्रमशः !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 29

महर्षि अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय

मित्रो 1994 में राज्य मध्यप्रदेश जबलपुर की एक तहसील उमरिया में भावातीत ध्यान के प्रकटकर्ता महर्षि महेश योगी जी ने अंतरराष्ट्रीय हिन्दू वैदिक विश्व विद्यालय खोले जाने की घोषणा की !
जिसके अंतर्गत दुनिया की सबसे ऊंची 100 मंजिला भवन बनाया जाता जिसमे 1 लाख ब्राह्मण वेदो, शास्त्रो का अध्ययन करते !

इसके लिए जमीन के सर्वे हेतु विदेश विशेषज्ञों की टीम आई नक्शा तैयार हुआ करीब 50 किलोमीटर घेरे की जमीन खरीदने की प्रक्रिया आरम्भ हो गई !

निर्माण सम्बन्धी फ़ाइल मध्य प्रदेश की दिग्विजय सिंह की कांग्रेज़ सरकार के कार्यालयों में घूमती रही !

फिर जून 1997 में जबलपुर में भूकम्प आया और फिर तहसील के पटवारी ने लिखकर दिया कि भूकंप ग्रस्त क्षेत्र में 100 मंजिल इमारत बनाना खतरनाक होगा और मात्र इस पटवारी की रिपोर्ट के आधार पर कांग्रेज़ सरकार ने अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रस्ताव को पूरी तरह निरस्त कर दिया !

जबकि समस्त राष्ट्रीय मिडिया,समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, मध्यप्रदेश के सरकारी गजट में ये प्रोजेक्ट प्रकाशोत, प्रचारित जो चूका था !

इस निरस्तीकरण के विषय में भूकम्प वैज्ञानिकों भवन विशेषज्ञों महर्षि के अंतरराष्ट्रीय स्तर के इंजीनियरों से कोई सलाह विचार लिए बिना प्रस्ताव रद्द कर दिया दिग्विजय सिंह सरकार ने !

जबकि सबको मालूम है चीन जापान में हर वर्ष भूकम्प आते है तो क्या वहा ऊँची इमारतें नही बनती ?

अब सुनिए यदि ये हिन्दू अंतरराष्ट्रीय वैदिक विश्वविद्यालय बन जाता तो

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

1. वैदिक विज्ञान,भावातीत ध्यान के भारतीय पंडित विशेषज्ञ पूरी दुनिया में छा जाते !

2.मध्य प्रदेश में एवं फिर पुरे देश में इसाई मिशनरियों का कार्य रुक जाता क्योंकि यहां के लोग देखते कि इसाई गोरे लोग तो स्वयं हिन्दू गुरुओं के चरणों में शरणागत होते है तो फिर इसाई धर्म में क्यों जाना ?

3. वेद विज्ञान,यज्ञ विज्ञान,योग प्राणायाम, ज्योतिष विज्ञान,संस्कृत ,आयुर्वेद की दुनिया की सबसे बडी प्रयोगशाला, प्रशिक्षण शाला, महर्षि का ये संस्थान होता !
तो फिर इन क्षेत्रों में कार्य कर रही विदेशी दुकानें बंद होने लगती !

4. इस विश्वविद्यालय के खुलने के बाद इस्कान को भारत में कोई ग्राहक नही मिलते क्योंकि भारत का हिन्दू अपने धर्म, धर्मग्रंथो की शक्तियों से परिचित हो जाता !

5. शिक्षा क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा प्रवाह भारत की ओर हो जाता !

6. अंग्रेजी फिर से मलेक्षो की भाषा मानी जाती?और संस्क्रत प्रतिष्ठित हो जाती जिससे अंग्रेजी स्कुल ,कालेजी बन्द होने लगते तो इसाई मिशनरी का प्रभाव शून्य होने लग जाता और भारतीय मुद्रा जो इनके स्कूलों के माध्यम् से विदेश जाती है वो रुक जाती और उपर्युक्त कारणों से यूरोप, इंग्लैंड, अमेरिका के खजाने में बहुत गरीबी हो जाती !

तो इन कारणों से अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू विश्विद्यालय भारत में बनाने से रोक दिया गया !

12वी तक आर्ट्स पढ़े एक पटवारी की टिप्पणी के कारण !

क्योंकि भविष्य में 2015 में दुनिया के सबसे ऊंचे भवन अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रकारी इस्कान का निर्माण होना था !
वृंदावन में !
और अब किसी को भूकम्प, बाढ़ की चिंता नहीं सता रही !
20 वर्ष का अंतर रखकर इस्कान का षड्यंत्र सफल है !
संज्ञानात्मक ! क्रमशः

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षडयंत्र

भाग - 30

वास्तु शास्त्र

मित्रो प्राचीन भारत वर्ष में समस्त तरह का ज्ञान सप्तऋषियों को भगवान ब्रहमाजी से प्राप्त हुआ था !

मनुष्य को शिक्षित करने,जीवन निर्वाह सिखाने,कपड़ा, भोजन कृषि, नगर बसाने आदि का ज्ञान ऋषियो ने मनुष्यो को दिया जिसका उल्लेख पुराणों (अर्थात हिन्दू इतिहास ग्रन्थ) में मिलता है !

अग्निपुराण में एक नगर किस परिमाण का बसाया जाए, इसमें कौन सा भवन, किस व्यापार, कर्म के लोग किस तरफ निवास करे, सड़क, नाली, बाँध, तालाब आदि की व्यवस्था कैसी हो, इसका पूर्ण विवरण अग्निपुराण में दिया हुआ है !

घर बनाने का, घर की लंबाई चौड़ाई, आंगन आदि किस नाप के हो, ये सब विवरण भी इस ग्रंथ एवम अन्य ग्रंथो में होता है!

कोणार्क का सूर्य मन्दिर, अंकोरवाट मन्दिर, मुल्तान स्थित विशाल सूर्य मन्दिर (अब नष्ट), अजंता एलोरा गुफाएं, आमेर का किला, हवामहल, जलमहल, मांडू का किला, इन सबकी वास्तुकला के विषय में स्कूल कालेज की किताबो में कोई वर्णन नही किया जाता !
जबकि मुगलो ने जिन मंदिरो, महलों को तोड़कर उनका कुछ रूप बदल दिया उनके विषय में अवश्य किताबो में वर्णन किया जाता है !
कि ये मुग़ल+हिन्दू वास्तुकला है जिसको अमुक मुसलमान बादशाह ने बनवाया (ताकि हिन्दू भवन ध्वस्त करने की बात छिपी रहे)

मित्रो साथ ही अग्निपुराण के अध्यायों से ये स्प्ष्ट हो जाता है कि योजनाबद्ध नगर बसाने, बाँध, तालाब, सिंचाई, कृषि व्यवस्था का आरम्भ भारत से ही हुआ है !

और प्राचीन काल के सब तरह के निर्माण कार्यो में इंद्रप्रस्थ को राजधानी के रूप में स्थापित करने के समय पांडवो द्वारा बनाए गया मायामहल और

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

महाराज परीक्षित द्वारा सांप के जहर से मृत्यु होने से बचने हेतु बनाये गए छिद्र विहीन भवन प्राचीनकाल की अद्भुत वास्तुकला, इंजीनियरिंग के उत्तम उदाहरण थे !

प्राचीन भारतीय वास्तुकला, नगर स्थापित करने की कला, इंजीनियरिंग को भारत के स्कूली पाठ्यक्रम में पूरी तरह नकार दिया गया !
ताकि भारतीय प्राचीन हिन्दू वास्तु ज्ञान का यहां के विद्यार्थियों को पता ना चले और हर चीज को वो मुगलो, अंग्रेजो द्वारा बनाया मान ले !

पुरे देश हर स्कूल, कालेज की किताबो से ये प्राचीन विषय वस्तुज्ञान पूरी तरह गायब है !

किसके दवाब में ?

संज्ञानात्मक !

https://t.me/Sahitya_Junction_Official